मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने इनक्लूसिव एवं स्पेशल एजुकेशन पर दो दिवसीय कार्यशाला और कोलाब्रेटिव भारत-जर्मन डायलॉग का किया आयोजन

नई दिल्ली, 30 सितंबर, 2025

"एनहॅन्सिंग इंक्लूसिव एजुकेशन थ्रू पेडागॉजिकल प्रैक्टिसस, टीचर एजुकेशन, एंड द रोल ऑफ स्पेशल एजुकेशन विद स्पेशल रेफरेन्स टू जेंडर – ए कोलॅबोवरेटिव इंडो-जर्मन डायलॉग ऑनल इंक्लूसिव एंड स्पेशल एजुकेशन"विषय पर 29-30 सितंबर, 2025 को दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का आयोजन जवाहरलाल नेहरू अध्ययन केंद्र, जामिया मिलिया इस्लामिया (जेएमआई) और कोलोन विश्वविद्यालय के भारत कार्यालयों, मैक्स प्लैंक सोसायटी और हेडलबर्ग विश्वविद्यालय के सहयोग से किया गया था, जिसमें डीडब्ल्यूआईएच नई दिल्ली का सहयोग भी शामिल था।

यह कार्यशाला जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति प्रोफेसर मज़हर आसिफ़, जामिया मिल्लिया इस्लामिया के रजिस्ट्रार प्रोफेसर मोहम्मद महताब आलम रिज़वी और जवाहरलाल नेहरू अध्ययन केंद्र की मानद निदेशक प्रोफेसर भारती शर्मा के मार्गदर्शन में जामिया के जवाहरलाल नेहरू अध्ययन केंद्र के व्यापक प्रयासों का परिणाम थी। साथ ही हीडलबर्ग विश्वविद्यालय, मैक्स प्लैंक सोसाइटी और कोलोन विश्वविद्यालय ने भी इसका आयोजन किया। यह सहयोग दस प्रतिष्ठित भारतीय संस्थानों के गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिनिधियों को सफलतापूर्वक एक साथ ला सका, ये हैं: दिल्ली विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एनसीटीई), केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान - राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (सीआईईटी-एनसीईआरटी), मानव व्यवहार और संबद्ध विज्ञान संस्थान (आईएचबीएएस), सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), सिम्बायोसिस अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, एमिटी विश्वविद्यालय और गलगोटिया विश्वविद्यालय।

स्वागत भाषण डॉ. अमीषा जैन (कोलोन विश्वविद्यालय), डॉ. पूनम सूरी (मैक्स प्लैंक सोसाइटी) और डॉ. सुबूर बख्त (हीडलबर्ग विश्वविद्यालय) ने संयुक्त रूप से दिया।

उद्घाटन भाषण और सत्र जामिया मिल्लिया इस्लामिया के परीक्षा नियंत्रक प्रो. पवन कुमार शर्मा ने दिए। अपने संबोधन में, उन्होंने समावेशी और विशेष शिक्षा तथा भारतीय सभ्यता की गहरी जड़ों के बीच एक गहन संबंध स्थापित किया। इन पारंपरिक मूल्यों को समकालीन शैक्षिक प्रथाओं से जोड़ते हुए, उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि समावेशी शिक्षा केवल एक आधुनिक अवधारणा नहीं है, बल्कि भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक अभिन्न अंग है, जो हमें शिक्षण स्थलों में समानता और सामंजस्य की ओर ले जाती है।

उद्घाटन भाषण के बाद, भारतीय विश्वविद्यालय संघ के संयुक्त सचिव डॉ. आलोक कुमार मिश्रा ने विकलांगता पर एक विचारोत्तेजक दृष्टिकोण के साथ सभा को संबोधित किया।

सत्र के मुख्य वक्ता श्री विकास त्रिवेदी, उप-मुख्य आयुक्त, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार, दिव्यांगजन कल्याण विभाग थे। अपने संबोधन में श्री त्रिवेदी ने इस बात पर ज़ोर दिया

कि समावेशन कोई दान-पुण्य नहीं, बल्कि एक संवैधानिक आदेश है जो न्याय और समानता के मूल्यों को प्रतिबिम्बित करता है। अपने विशाल प्रशासनिक अनुभव का उपयोग करते हुए, उन्होंने सुगम्यता को मज़बूत करने, सहायक तकनीकों को बढ़ावा देने और दिव्यांगजनों को शिक्षा के साथ-साथ रोज़गार के अवसर प्रदान करने के सरकार के प्रयासों पर ज़ोर दिया।

शिक्षा मंत्रालय के राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एनसीटीई) के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) पंकज अरोड़ा ने पूर्व-रिकॉर्डेड वीडियो मोड में एक विशेष संबोधन भी दिया। उन्होंने जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली के कुलपति प्रो. मज़हर आसिफ़ और अन्य गणमान्य व्यक्तियों का गर्मजोशी से स्वागत किया। प्रो. अरोड़ा ने राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एनसीटीई) और भारतीय पुनर्वास परिषद (आरसीआई) की समावेशी नीतियों और पहलों पर चर्चा की, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के महत्व पर ज़ोर दिया और इस बात पर ज़ोर दिया कि शिक्षा सुलभ, न्यायसंगत और लचीली होनी चाहिए। उनके व्याख्यान में समानता और समग्र शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों को समावेशी शिक्षक के रूप में तैयार करने पर ज़ोर दिया गया।

प्रो. भारती शर्मा ने सभी गणमान्य व्यक्तियों, मुख्य वक्ताओं और प्रतिभागियों का हार्दिक धन्यवाद किया। उन्होंने उनकी गरिमामयी उपस्थिति और बहुमूल्य योगदान की सराहना की और इस बात पर ज़ोर दिया कि उनकी अंतर्दृष्टि और सहयोग ने इस आयोजन को अत्यधिक मूल्यवान बनाया है और आगामी सत्रों के लिए एक सार्थक वातावरण तैयार किया है।

दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला को आठ सत्रों में विभाजित किया गया था, प्रत्येक दिन चार सत्र आयोजित किए गए थे, और इसका समापन 30 सितंबर 2025 को एक समापन सत्र के साथ हुआ। प्रत्येक सत्र का समन्वयन सुसंगठित था, जिसकी अध्यक्षता एक अकादमिक विशेषज्ञ ने की, और इसमें भारत और जर्मनी का प्रतिनिधित्व करने वाले दो-दो वक्ताओं ने भाग लिया, जिससे विविध दृष्टिकोणों से चर्चा समृद्ध हुई।

पहले दिन की शुरुआत "वैश्विक संदर्भ में समावेशी शिक्षा: भारत और जर्मनी में नीति और व्यवहार" विषय पर विचार-विमर्श के साथ हुई। वक्ताओं ने नीतिगत ढाँचों की व्यापक तुलना की और दोनों देशों में कार्यान्वयन रणनीतियों, चुनौतियों और उपलब्धियों में समानताओं और अंतरों पर प्रकाश डाला। दोपहर के भोजन के बाद, अत्यंत प्रासंगिक विषयों पर तीन सत्र आयोजित किए गए। पहले सत्र में समावेशी शिक्षा में प्रौद्योगिकी, नवाचार और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका पर चर्चा की गई और डिजिटल उपकरणों की परिवर्तनकारी शक्ति पर ज़ोर दिया गया। इसके बाद के सत्र में शिक्षक तैयारी और विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया, जो सेवा-पूर्व स्तर पर और सतत व्यावसायिक विकास के माध्यम से समावेशी प्रथाओं के प्रमुख प्रवर्तक हैं। इसके बाद एक जीवंत पोस्टर प्रस्तुति सत्र और साथ ही हाई टी का आयोजन किया गया, जिसमें नवीन विचारों का प्रदर्शन किया गया। दिन का समापन "कार्य में समावेश: समावेशी शैक्षणिक स्थानों के निर्माण पर अंतर्दृष्टि" के साथ हुआ, जिसमें शैक्षणिक संस्थानों में समानता और सुगम्यता को बढ़ावा देने के लिए व्यावहारिक रणनीतियाँ प्रस्तुत की गईं।

अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला के दूसरे दिन की शुरुआत पाँचवें सत्र से हुई, जिसका विषय "विशेष और समावेशी शिक्षा में लैंगिक और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण" था। वक्ताओं ने इस बात पर प्रकाश डाला कि सामाजिक संरचनाएँ, सांस्कृतिक धारणाएँ और लैंगिक भूमिकाएँ शिक्षा तक पहुँच को कैसे प्रभावित करती हैं, और नीति और व्यवहार में समानता और संवेदनशीलता की आवश्यकता पर बल दिया। छठे

सत्र में "बच्चों के सीखने में मनोवैज्ञानिक उपचार और हस्तक्षेप" पर चर्चा की गई, जिसमें समावेशी शिक्षण परिणामों को बढ़ावा देने में प्रारंभिक पहचान, परामर्श और चिकित्सीय सहायता के महत्व पर ज़ोर दिया गया।

दोपहर के भोजन के बाद, सातवें सत्र में "पेडागॉजिकल एंड एवॅल्यूयेशन प्रॅक्टिसस इन इंक्लूसिव एजुकेशन," पर चर्चा हुई, जिसमें लर्निंग के परिणामों का निष्पक्ष मूल्यांकन करने के लिए व्यावहारिक ढाँचे और मॉडल प्रस्तुत किए गए। आठवें सत्र में कोलोन विश्वविद्यालय के एक विदेशी स्कूल में इंटर्नशिप कार्यक्रम का परिचय दिया गया, जिसमें अनुभवात्मक शिक्षण के अवसरों और सीमा पार शैक्षणिक सहयोग के बारे में जानकारी प्रदान की गई।

कार्यशाला का समापन जामिया मिल्लिया इस्लामिया के रजिस्ट्रार प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिज़वी की शुभकामनाओं के साथ एक समापन सत्र के रूप में हुआ, जिसके बाद कोलोन विश्वविद्यालय की डॉ. अमीषा जैन ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापित किया, जिससे दो दिवसीय विचार-विमर्श का सफल समापन हुआ।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी